नारी तू शक्ति है

भारत के गॉव-गॉव में देवियों के मन्दिर निर्माण हुए। कोई ग्रामदेवी के रुप में पूजी गई, कोई नगर देवी के रूप में। इस नगर पर यदि कोई आपदा आई तो लोगों ने कहा देवी नाराज है उसे राजी करो। हजारों वर्ष से भक्ति का ये खेल चलता आया है।

पुराणों में भी प्रसिद्ध है कि शिव को जब नव सृष्टि की रचना का कार्य करना था, तो वह अकेला नहीं कर पाया। उसने शक्तियों का साथ लिया। शिव और शक्ति का गायन व पूजन होने लगा। शक्तियों ने असुर संहार किया और भूमण्डल पर सुख-चैन की पवन बहने लगी ।

किसी शक्ति को आठ भुजाएँ, किसी को चार व किसी को सोलह ये क्यों? भुजाएँ तो दो ही होती है तो इन भुजाओं का रहस्य क्या? कोई शक्ति शेर पर विराजमान हैं, तो कोई गाय पर, कोई मगर की पीठ पर बैठी है, तो कोई मुर्गे पर सवार है, ये अजीब वाहन किसके प्रतीक है? ये शक्तियॉ कौन थी? अब कहॉ चली गई? इन कुछ रहस्यों पर यहॉ प्रकाश डाला गया है।

कलियुग के अन्त में जब निराकार परमात्मा शिव का इस धरा पर नवयुग निर्माण हेतु अवतार हुआ तो उसने नारी शक्ति को विश्व उद्धार का काम सौंपा। योग सिखाकर और तपस्या कराकर उन्हें असीम शक्तियॉ प्रदान की अर्थात् उन्हें शक्तियॉ बनाया। वे नारियॉ ही शिव शक्ति कहलाई क्योंकि उन्होंने शिव से सर्व शक्ति प्राप्त की।

चित्रों में शक्तियों को भुजाओं के रूप में और ज्ञान को शस्त्रों के रूप में चित्रित कर दिया है। वास्तव में शिव की ये शक्तियॉ पूर्ण अहिंसक बनी। हथियार देखकर लोग सोचते हैं कि शायद उन्होने युद्ध किया और असुरों को नष्ट किया। नहीं, सम्पूर्ण अहिंसक व योग बल से सुसज्जित शिव शक्तियॉ नर संहार नहीं करती, रक्त नहीं पीती। राक्षस किसी जाति विशेष का पर्याय नहीं, बल्कि मनुष्य के अन्दर छुपी राक्षसी प्रवृत्तियों का परिचायक है। तो इन शिव शक्तियों ने ज्ञान-योग के बल से इन राक्षसों का संहार किया, मनुष्य को देवता बनाया जिसने जितनी शक्तियॉ प्राप्त की उतनी ही भुजाएँ उनको प्रदान की गई। जिनकी जो स्थिति बनी, उसी अनुसार उनको वाहन दिखाये गये। बाकि ऐसा कुछ भी नहीं कि ये शक्तियॉ इस तरह के वाहनों पर सवारी करती हैं।

अब पुन: कलि के अन्तिम काल में शिव ने नारियों को शक्तियॉ बनाया है। ब्रह्म-कुमारियॉ शिव शक्तियॉ ही हैं। इनके द्वारा वे आसुरी वृत्तियों का संहार, मानव का उद्धार व नवयुग के निर्माण का कार्य कर रहे हैं। त्रिमुर्ति शिव ने नारी जाति का आह्वान किया है। वे कहते है.. हे वत्सों आओ अपने सत्य स्वरूप को पहचानो। अपनी आन्तरिक शक्तियों को जानों, तुम अबला नहीं हो। सर्वशक्तिवान के बच्चे अबला नहीं होते। तुम तो शिव शक्तियॉ हो। उठो, जगत माता बनकर तुम्हें विश्व कल्याण करना है। शिव आकर शक्तियों को वरदान बॉट रहे हैं। उनमें पवित्रता का बल भर रहे हैं। उन्होंने माया को चुनौति दी है।

उनका युद्ध भी माया से ही है। माया अर्थात् मनोविकार, विकृतियॉ, व्यसन, कुसंस्कार अर्थात् काम, क्रोध और अहंकार आदि आदि। जो इनसे युद्ध कर सके वही महावीर है, सर्व शक्तिशाली है। जो इनको जीत सके वही विश्व विजयी बनते हैं। सांसारिक युद्धों को जीतने से भी कठिन कार्य है इस माया को परास्त करना। ये शिव शक्तियॉ शिव से वरदान व शस्त्र लेकर माया जीत बनकर विश्व का उद्धार करती हैं।

नारी को शक्ति कहा जाता है, न जाने किस अहंकारी व्यक्ति ने नारी के साथ अबला शब्द जोड़ दिया और नारी का तिरस्कार किया। अनेक नारियॉ इस अबला शब्द से घृणा करती हैं। वे कहती हैं कि वह मनुष्य स्वयं बड़ा निर्बल होगा जिसने नारी को अबला कहा। शेर पर सवार दुर्गा को अबला कहना, असुर संहारिनी काली को अबला कहना क्या यह बुद्धिमानी है? जिनकी याद से ही मनुष्य अभय दान पाता है वे नारी शक्तियॉ अबला कैसे? नारियों ने

सिद्ध कर दिया कि वे अबला नहीं है। अनेक स्थानों पर वे पुरूषों से आगे निकल गई। कित्तूर की रानी चैनम्मा, रानी तारा बाई, रानी लक्ष्मी बाई नारी जाति की शक्तियों के प्रतीक हैं जिनके समक्ष शत्रुओं को भी सिर झुकाना पड़ा। दूर क्यों जाएँ, क्या श्रीमति इन्द्रा गॉधी अबला थी? क्या माग्रेट थ्रेचर अबला है? सभी कहेंगे नहीं। जिन माताओं ने शिवाजी और महाराणा प्रताप जैसे वीरों को जन्म दिया। जिनकी कोख से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और तिलक जैसे लोग जन्मे, जो नारी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द व अन्य आध्यात्मिक वीरों की जननी बनी, क्या उन्हें अबला कहा जा सकेगा? नहीं..... तो नारी अबला नहीं, वास्तव में कुछ स्वार्थी मनुषयों ने उन्हें अपने अधीन करके निर्बल बना दिया है। हम सब जानते हैं कि भटकते प्राणी को, पथ भ्रष्ट इन्सान को नारी ही तो सन्मार्ग पर लाती है। नारियों ने अनेकों को पशु तुल्य मनुष्य से सच्चा इन्सान बनाया। और अब तो स्वयं भगवान ने उन्हे इतना शक्तिशली बना दिया कि उन्होंने विश्व परिवर्तन का कार्यभार सम्भाल लिया है। अब नारियॉ शिव शक्तियॉ बनकर वो कार्य कर रही हैं जो पुरूष कभी न कर सका। इसलिए पुरूषों को उनकी महानताओं के आगे नत मस्तक होना पड़ता है।

संसार की नारी शक्ति का शिव ने पुन: आह्वान किया है, उन्हें अपनी छत्रछाया में लिया है, उनके दुख के ऑसू पोंछे , उनके ऑचल में अमृत भरा है । अब यह नारियों का कर्तव्य है कि वे नारी ही रहना चाहती हैं या शिव शक्तियॉ बनना चाहती है, वे अपने बच्चों की ही मॉ बनी रहना चाहती हैं या जगत जननी का ताज पहनना चाहती हैं, वे चार दीवार में बंधी रहना चाहती हैं या विश्व कल्याण की स्टेज पर उतरना चाहती हैं।

यदि नारी शक्ति बन जाये, नाजुकपन छोड़ दे, कमजोर विचार व भय छोड़ दे, फीलिंग और रोना छोड़ दे, अत्यधिक भावुकता व मोह छोड़ दें तो शिव उन्हे बुला रहे हैं। हे नारियों! अब शिव शक्ति बनो । यह इस सुन्दर समय को वरदान है यदि तुमने शिव शक्ति बनने का दृढता पूर्वक विचार कर लिया है तो परचिन्तन, ईर्ष्या छोड़ दो, समाने की शक्ति धारण कर लो। सहनशक्ति तो माताओं में पहले ही ज्यादा है। त्याग के तो आपमें बीज पड़े हैं, उन्हे अकुंरित करके अब तपस्या करो तो तपस्या की अग्नि में तुम्हारा नारीपन नष्ट हो जायेगा और तुम शिव शक्ति बनकर शिव का कार्य सम्भालोगी।

हे शिव शक्तियों , स्वयं शिव ने अपने श्रेष्ठ कार्य के लिए तुम्हे चुना है। स्वयं को शिव से योग युक्त करो। शिव अपनी समस्त शक्यिाँ तुम्हे प्रदान करेंगे और तुम सर्वशक्वान शिव जैसी ही शक्तिशाली बन जाओगी। अब पुन: उसने वरदान सहित जो अस्त्र-शस्त्र तुम्हे प्रदान किये हैं उन्हे सम्हालों। तुम्हे युद्ध के मैदान में उतरना है। बिना शस्त्रों के तुम्हारी विजय कठिन होगी। याद रखो शिव ने तुम्हारी विजय पहले ही निश्चित कर दी है तुम हिम्मत पूर्वक आगे बढ़ो। शिव स्वयं तुम्हारा साथी है। सर्व शक्तिवान का साथ होने के कारण अन्य सभी शक्तियॉ तुम्हारे समक्ष झुक जायेगी, यह कभी भूलना नहीं।

ओम शांति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स